स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान – एक अध्ययन

“ Contribution of Local Languages in Students Cultural Development – A study.”

पी–एच.डी. **शोध – प्रारूप**

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर (राज.)

शिक्षा विभाग

शोधकर्त्री

श्रीमती अल्पना शर्मा

शोध निर्देशक

प्रो. कंचन शर्मा

विभागाध्यक्ष (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर (राज.)

सत्र – 2016

शोध प्रारूप

1. शोधकर्त्री का नाम : श्रीमती अल्पना शर्मा

2. शोध का शीर्षक : स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान – एक अध्ययन

''Contribution of Local Languages in Students Cultural Development – A study.''

3. अध्ययन का स्थान : शिक्षा संकाय, उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर (राज.)

4. अध्ययन का क्षेत्र : शिक्षा दर्शन

5. अध्ययन का उद्देश्य :–

5.1 उद्देश्य :

1. स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान का अध्ययन करना।
2. स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के साहित्यिक विकास में योगदान का अध्ययन करना
3. स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास में योगदान का अध्ययन करना

4. स्थानीय भाषाओं का सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण में योगदान का अध्ययन करना।
5. स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों की वर्तमान संस्कृति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. स्थानीय भाषाओं की चुनौतियों का विद्यार्थियों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।

5. अध्ययन का महत्व :-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल।।[1]

‘हम भाषा को नहीं बनाते भाषा हमें बनाती है। अज्ञेय के इस कथन को बीज रूप में लेकर भाषा की भूमिका स्पष्ट होगी। चीन की मंदारिन से बड़ा परिवार हिन्दी का है जिसमें हरियाणवी, मेवाड़ी, मेवाती, राजस्थानी, मालवी, हाड़ौती, बृज, अवधी मैथिली, भोजपुरी आदि। भाषा संस्कृति का वाहन है और उसका अंग भी इस संस्कृति का मूल स्रोत वेदों में उपलब्ध होता है और जहां कहा गया ‘‘माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः’’ अर्थात पृथ्वी को माता और मनुष्य को उसका पुत्र मानने की संकल्पना प्रस्थापित की गई। इसके परिणामस्वरूप सारा भारतीय चिंतन जीवन के उदात्त आदर्शो को समाहित करता रहा। भाषा हमें जोड़ती भी है और बांटती भी है। जोड़ती इस रूप में कि भाषा हमें अपने पड़ौसी को अपने समाज को वृहत्तर मनुष्यता को समझने का अवसर और माध्यम देती है और बांटती तब है जब हम भाषा के आधार पर अपने-पराये का भेद करने लगते है। जैसे वह हिन्दी भाषी है, यह गुजराती है, तमिल भाषी है, पंजाबी, मराठी, बांग्ला, असमिया, मराठी, राजस्थानी, उड़िया भाषी आदि। इन सभी को पृथक-पृथक समझकर उस विशाल समाज को बांटते है जो एक राष्ट्र के रूप में हमारी विशेषता है पहचान है अतः भाषा के आधार पर यह बंटवारा हमें सब प्रकार से कमजोर बनाता है। रामधारी सिंह ‘दिनकर’ कहते है ‘‘भाषा की दो खानें हैं एक पुस्तकों में दूसरी जनता की जबान पर।’’ इससे और आगे

[1] भाई योगेन्द्र जीत, “हिन्दी भाषा शिक्षण” विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ. सं. 1

बढ़कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है – ''भाषा में प्रयुक्त एक-एक शब्द एक-एक स्वराघात कुछ सूचना देते है।'' व्यक्तियों के नाम, कुलों, या खानदानों के नाम, पुराने गांवों के नाम, जीवन, इतिहास के साक्षी है। हमारे रीति रस्म, पहनावे, मेले, गान, नाच, पर्व, त्यौहार उत्सव, हमारे पुराने इतिहास की कथा सुनाते है। देश की सब भाषाओं को जब हम इस दृष्टि से देखे कि ये सब भाषाएँ हमारी है। यह सब मिलकर ही हमारी पहचान को पूर्णता देती है और यह भाषायी विविधता अनेकता में एकता कुल मिलाकर हमारी सांस्कृतिक समृद्धि को ही उजागर करता है।

भाषा विज्ञान के अनुसार बोली ही भाषा का रूप ग्रहण करती है इसलिए भाषा वैज्ञानिकों ने भाषा को दो स्वरूप में स्वीकार किया है।

(1) मौखिक स्वरूप (2) लिखित स्वरूप

मौखिक स्वरूप को लौकिक साहित्य व लिखित स्वरूप को अभिजात्य साहित्य की परिभाषा दी गई है। भाषा वैज्ञानिकों की मान्यता है कि सर्वप्रथम मौखिक रूप में ही विकसित होती है इसलिए इसका लौक साहित्य उतना ही प्राचीन होता है। लोक साहित्य के अन्तर्गत काव्य को ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है अतएव लोकगीतों को प्राचीनतम रचनाएँ स्वीकार किया गया है।[2]

6. अध्ययन की आवश्यकता :-

आज वैश्विक परिदृश्य बहुत तीव्र गति से बदलने की दिशा में गतिमान है ऐसे में जब वैश्विक परिस्थितियां मानव को एक नई राह टटोलने को बेचैन किये है उनकी समस्याओं को भारत किस तरह समाधान दे पाता है इस पर बहुत कुछ निर्भर है। हमारे ऋषियों ने विद्वानों ने, देशभक्तों ने समय-समय पर भरतीयता को अलग-अलग रूपों, संदर्भों, अर्थों में परिभाषित किया है समझाया है। लेकिन समझने की बात है कि हमारी भाषाएँ, हमारी बोलियाँ, हमारी परम्पराएँ, हमारे मूल्य और हमारे आदर्श। ये सब मिलकर हमें एक परिभाषा देते है। यही परिभाषा उस भारतीयता को आकार देती है जो विविधता व एकता का अति

[2] शेखावत, कल्याण सिंह "राजस्थानी भाषा : साहित्य संस्कृति" राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर पृ. सं. 5–7, 333

सुंदर उदाहरण है। अज्ञेय के शब्दों में ‘‘किसी समाज को अनिवार्यतः अपनी भाषा में ही जीना होगा, न ही तो उसकी अस्मिता कुंठित ही होगी और उसमें आत्म बहिष्कार या अजनबियत के विचार प्रकट होगे ही।’’ हमारी संस्कृति के उदात्त तत्वों ने इस देश को प्रभावित किया और इसके सर्वसमावेशी गुणों ने अपनी व्याप्ति से एशिया के बड़े भू-भाग को भारत की ओर आकृष्ट किया। बाद में बौद्ध धर्म के प्रसार में यह व्याप्ति ज्यादा प्रखर होती गई। थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया की भाषाओं में संस्कृत का बाहुल्य भारत के प्रभाव की ओर ही तो इंगित कर रहा है।

स्थानीय भाषाओं का भी लगभग दो हजार वर्षो का साहित्य का इतिहास है। स्थानीय भाषाएँ अत्यन्त सम्पन्न तथा प्राचीन है। प्राचीन समय से अद्यावधि स्थानीय एक ओर लोकभाषा, जनभाषा रही है तो दूसरी ओर साहित्य, शिक्षा, प्रशासन एवं न्यायालय की भाषा भी रही है। लिखित साहित्य के रूप में विविध विषयों से सम्बन्धित लाखों हस्तलिखित ग्रंथ स्थानीय भाषाओं में लिखे हुए आज भी उपलब्ध है। साहित्य के अतिरिक्त इतिहास, भूगोल, खगोल शास्त्र, संगीत, चिकित्सा, मनोविज्ञान, जीव एवं प्राणी विज्ञान, अंतरिक्ष एवं ज्योतिष, राजनीति विज्ञान तथा समाज शास्त्र आदि विविध विषयों के महत्वपूर्ण ग्रन्थ स्थानीय भाषाओं में लिखे हुए प्राप्त होते है। ऐसे हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या लगभग पांच लाख आंकी गई है। जिनमें विदेशों में प्राप्त होने वाले ग्रन्थ भी शामिल है।

स्थानीय भाषा की लौकिक साहित्य सम्पदा भी अत्यन्त विपुल एवं विविध है। लगभग तीन लाख लोकगीत दो लाख कहावते व मुहावरे, अनन्त लोक कथाएं, बातें, लोक नाट्य आदि विविध प्रकार की विधाओं से युक्त साहित्य हमारी भाषा में सुरक्षित है।

करोड़ों जन की मातृभाषा, रआज इस कारण भी उपेक्षित है कि उसका सम्पूर्ण परिचय न भारतीयों को है न ही विश्व साहित्य को।

भारतीय संविधान में 22 भाारतीय भाषाओं को मान्यता दी गई है लेकिन कुछ स्थानीय भाषाएँ अपनी इस महता को प्राप्त करने के लिए जूझ रही है। अनेक आंदोलन भी चले है लेकिन परिणाम कुछ भी नही है। अतः स्थानीय

भाषाओं की सर्वांगीण विशेषताओं का देखते हुए आवश्यकता इस बात की है कि स्थानीय भाषाओं का साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान व मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन किया जाये, जो अपने अन्दर एक अलग विश्व को समेटे है।

7. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :

अध्ययन से सम्बन्धित शोधकार्यो का पुनरावलोकन भारत व विदेशों में किए गये अध्ययनों का पुनावलोकन।

1. रानी, अन्जु (2008) हेमवती नंदन बहुगुणा वि.वि., श्रीनगर में डॉ. सुरेश ममगाँई के निर्देशन में 'मध्य–हिन्दी सतसई साहित्य में लोक संस्कृति' विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय कार्य किया। निष्कर्ष – इस शोध कार्य में मध्यकालीन सतसई साहित्य के अन्तर्गत तुलसी सतसई, रहीम सतसई, अमीरदास सतसई, वृन्द, कवि रामसहाय दास, बिहारी, दयाराम, मतिराम, रसनिधि, विक्रम आदि की सतसईयों में विभिन्न प्रकार के तत्सम, अर्धतत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दावलियों को चिन्हित कर उनका विशलेषण किया गया तथा निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सतसईकारों में लोकपरक लघु वार्ताओं का अत्यन्त सार्थक एवं कुशल प्रयोग किया गया है। जो केवल प्रयोग की दृष्टि से ही नहीं बल्कि जीवन की दृष्टि से भी सार्थक होती है। मुहावरों में जहां भाषा का लाक्षणिक चमत्कार रूढ होकर समा जाता है वहीं लोकोक्तियों में सामान्य जीवन का कोई न कोई अनुभाविक सत्य निहित रहता है। प्रत्येक शब्द जन सामान्य के जीवन से जुड़ा रहा है।
2. मीणा, एम.एल व सिंह, धीरज ने काजरी कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली, मारवाड़ में "राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में परम्परागत लो संचार विषय पर शोध किया इसके लिए उन्होंने खेतावास, रूपावास, हेमावास और सोडावास गाँवों का चयन किया। अध्ययन में सिर्फ पाँच परम्परागत संचार जैसे तमाशा, भजन, कीर्तन, कठपुतली व गोरबन्द को चुना गया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि परम्परागत मिडिया के रूप में सबसे ज्यादा तमाशा को पसन्द किया जा रहा है। क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

समसामयिक मुद्‌दों पर आधारित होता है। समग्रतः प्रस्तुत परम्परागत संचार पर आधारित तत्व के लिए प्रथम वरीयता सामाजिक परिदृश्य को दी जाती है जो कि देशभक्तिपूर्ण गीतों पर आधारित है।[3]

3. सेन, (1996) ने कालीदास के जरिये विकसित होने वाले र्प्यावरणीय, सामाजिक, राजनैतिक व प्रशासनिक मूल्यों का संस्कृत विषय के परिपेक्ष्य में अध्ययन करते हुए पाया कि कालिदास नाटक के मंचन में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में सामाजिक व र्प्यावरणीय मूल्यों का दृष्टिकोण छात्रों की तुलना में उच्च दृष्टिकोण में देखा गया।[4]

8. शोध अध्यायों का वर्गीकरण :

शोध सम्बन्धी अध्यायों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया जा रहा है –

अध्याय प्रथम – अध्ययन की पृष्ठिभूमि

1.1 प्रस्तावना :–

संस्कृत समस्त भाषाओं की जननी है और संस्कृत से ही पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ। कुछ विद्वानों ने भारतीय आर्यभाषा कुल और विभिन्न भाषाओं का परिचय प्रस्तुत किया है। डा. हीरालाल माहेश्वरी ने स्थानीय भाषाओं को भारतीय आर्य कुल की एक समृद्ध और सम्पन्न भाषा माना है। उनके अनुसार ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय आर्य भाषाओं को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

डॉ. सीताराम लालस के अनुसार भारतीय भाषाओं का विधिवत इतिहास प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नही है। तथापि उसकी साधारण रूपरेखा ऋग्वेद से आज तक उपलब्ध है। कुछ विद्वानों ने अनार्य भाषाओं को छोड़कर परिष्कृत भाषाओं का उद्‌गम वैदिक भाषा से माना है। श्री किशोर सिंह बार्हस्पत्य ने अपने

---

[3] Journal of Community mobilization and sustainable development. Vol 5(1) 077-080, January – June 2010

[4] भट्‌ट, नरेन्द्र, (२०११) “विविध धारावाहिकों में समावेशित मूल्यपरक शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन” उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान गां. वि. मं., सरदारशहर पृ.सं. ३१

एक शोध पत्र में इस संबंध में एक चित्र द्वारा एक भाषा का दूसरी भाषा से संबंध माना है।

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार भाषाओं का उद्गम स्रोत कठिनता से सरलता की ओर रहा है। सभी भाषाओं के दो स्वरूप परिलक्षित होते है। एक लौकिक स्वरूप दूसरा अभिजात्य स्वरूप। सभी भाषाएं प्रारंभ में लौकिक काव्य के रूप में प्रकट होती है। लोक की प्रवृत्ति भाषा के सरल स्वरूप की ओर होती है। अतः जब भी व्याकरण सम्मत क्लिष्ठ भाषा का अधिक प्रचलन होने लगता है तब सरल लौकिक भाषा के रूप में जन भाषाओं का विकास होने लगता है।

संस्कृति शब्द मूलतः कृ धातु से सम्बद्ध है जिसका अर्थ है 'करना' इसके पूर्व 'सम्' उपसर्ग इसके पूर्व 'सम्' उपसर्ग तथा धत्र (ति) प्रत्यय लगाने से संस्कार शब्द बनता है जिसका अर्थ पूरा करना, सुधारना, सज्जित करना, मांजकर चमकाना, श्रृंगार, सजावट आदि है। संस्कृत के अनुसार सम्+कृ+क्त से बना है जिसका अर्थ पूरा किया हुआ, माँजकर चमकाया हुआ, सुधारा हुआ, व्याकरण के नियमों के अनुसार सिद्ध (शब्द रूप आदि) सुनिर्मित तथा अलंकृत आदि है। इसी विशेषण की संज्ञा संस्कृति है

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार संस्कृत शब्द सम् उपसर्ग के साथ संस्कृत की (डु) कृ (ञ) धातु से बनता है, जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है। आज हिन्दी में यह अंग्रेजी शब्द कल्चर (culture) का पर्याय माना जाता है।

1.2 अध्ययन का औचित्य :-

किसी भी भाषा की विकास यात्रा से उसका सम्पूर्ण परिवेश जुड़ा होता है, साहित्य से वहां की संस्कृति भी सम्बद्ध होती है अतः स्थानीय भाषाओं और उनके साहित्यिक इतिहास के आलोचनात्मक अध्ययन के साथ 'संस्कृति का विस्तृत अध्ययन भी आवश्यक है।

अद्यावधि स्थानीय भाषा और संस्कृति का एकांगी अध्ययन होता रहा है संस्कृति को साथ जोड़कर लेखन करने की परम्परा विकसित नहीं हो पाई। प्रस्तुत अध्ययन के भारतीय संस्कृति को मूल में रखकर स्थानीय संस्कृति का

अनुशीलन करने का प्रयास किया जाना आवश्यक है। सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार बिंदु स्थानीय संस्कृति है। स्थानीय संस्कृति को अपनी विशिष्ट विशेषताएँ रही है। स्थानीय संस्कृति की छाप केवल भाषा और साहित्य तक सीमित नहीं रही अपितु लोक जीवन का भी आधार बनी।

अभी तक विभिन्न क्षेत्रीय, स्थानीय भाषाओं को संविधान के अनुसार मान्यता मिल चुकी है लेकिन कुछ स्थानीय भाषाएँ इसके लिए जूझ रही है। उसे मान्यता दिलाने हेतु अध्ययन की आवश्यकता है। स्थानीय भाषा को संस्कृति से जोड़कर अध्ययन करने की आवश्यकता है जिससे स्थानीय भाषाओं के महत्व को उजागर किया जा सके। अभी तक भाषा व संस्कृति विषयक अध्ययनों में काजरी कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली, मारवाड़ के एम.एल. मीणा व धीरज सिंह ने ''राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में परम्परागत संचार माध्यम'' विषय पर 2010 में अध्ययन किया। इसी प्रकार त्रिपाठी व भरत प्रसाद ने 2010 में ''समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त समाज और संस्कृति'' विषय पर पी.एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के उमाशंकर यादव ने 2013 में ''रीति युक्त धारा में अभिव्यक्त लोक संस्कृति'' विषय पर पी. एच.डी. स्तरीय विषय पर अध्ययन नाम मात्र का ही हुआ है अतः शोधकर्त्री ने प्रस्तुत विषय **''स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान – एक अध्ययन”** को अध्ययन हेतु चुना है।

1.3 समस्या कथन :–

शोध को प्रबन्धोचित भाषा में निश्चित शब्दावली में बांधा जाता है जो शीर्षक कहलाता है। प्रस्तुत शोध का भी शीर्षक निर्धारित किया गया है –

''स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान – एक अध्ययन”

''Contribution of Local Languages in Students Cultural Development – A study.''

1.4 प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या :-

1.4.1 स्थानीय भाषाएं – भाषा के वैदिक वाड़मय में अनेक नाम है। यथा वाग्, वाच्, गिर इत्यादि। ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा गया है –

''लोक व्यवहारें प्रचलित वागेन भाषा शब्देन व्यवहता।'' अर्थात लोक व्यवहार में प्रचलित ''वाग्'' शब्द ही भाषा शब्द के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। **स्वीट के अनुसार ''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचार की अभिव्यक्ति भाषा है।''**[५] भाषा के विभिन्न रूप प्रमुखतः दो आधारों पर आधारित है इतिहास और भूगोल। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश ये भेद ऐतिहासिक है भौगोलिक दृष्टि से अधिक व्यापक रूप भाषा है फिर बोली, स्थानीय बोली और इसका संकीर्णतम रूप बोली है। स्थानीय अर्थात (स्थान+छ) स्थान विशेष से सम्बद्ध होता है। भाषा का यह रूप स्थानीय भाषा बहुत सी व्यक्ति भाषाओं का सामूहिक रूप जिनमें आपस में कोई स्पष्ट अंतर न हो।

1.4.2 सांस्कृतिक विकास :- संस्कृति शब्द मूलत 'कृ' धातु से बना है। जिसका अर्थ है 'करना'। इसक पूर्व में 'सम्' उपसर्ग 'धत्र' (ति) प्रत्यय लगाने से संस्कृति शब्द बनता है। यह शब्द मूलत संस्कार है जिसका अर्थ है दोष का निराकरण, गुण का आधान, पूरा करना, सुधारना, सज्जित करना, मांजकर चमकाना, श्रृंगार, सजावट आदि। वाजस ने भी संहिता में यह 'तैयार करना' या 'पूर्णता' के अर्थ में आया है। तो ऐतरेय ब्राहाम्ण में बनावट या संरचना के अर्थ में। महाभारत ने कृष्ण के एक नाम के रूप में भी संस्कृति शब्द का प्रयोग हुआ है। अतः इन सभी तत्वों का विकास करना ही सांस्कृतिक विकास करना है।

आचार्य नरेन्द्र देव के अनुसार ''संस्कृति मानव चित्र की खेती है''। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने संस्कृति के वर्तमान अर्थ के लिए पुराने **'कृष्टि'** शब्द का प्रयोग किया जो एक तरह से **'कल्चर'** का ध्वन्यात्मक दृष्टि से संवादी शब्द है।

1.4.3 विद्यार्थी :- विद्यार्थी का शाब्दिक अर्थ है – विद्या+अर्थी अर्थात् जो विद्या को वहन करे। विद्या ग्रहण करने वाले बालक को विद्यार्थी कहते हैं। कोई भी

---

[5] तिवारी, भोलानाथ, भाषा विज्ञान कोश, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणासी पृ.सं. 456 व 457

व्यक्ति शिक्षा ग्रहण दो प्रकार से कर सकता है – औपचारिक व अनौपचारिक रूप से औपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण करने वाला ही विद्यार्थी है।

विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है। जो कोई चीज सीख रहा होता है। विद्यार्थी किसी भी आयु का हो सकता है। बालक, किशोर, युवा, व्यस्क जिसे किसी विद्यालय या संस्थान से सीखना पड़े वह विद्यार्थी होता है। अतः विद्यालय में नामांकित होकर औपचारिक रूप से शिक्षा ग्रहण करने वाला छात्र ही विद्यार्थी है।

1.5 अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में भाषा में निहित सांस्कृतिक तत्वों का अध्ययन कर उन्हें उजागर करना है अतः यहां दार्शनिक, ऐतिहासिक, विवरणात्मक, अवलोकन, साक्षात्कार एवं विषयवस्तु विश्लेषण विधि अपनाई जाएगी।

1.6 परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध दार्शनिक अध्ययन है दार्शनिक अध्ययन में परिसीमन की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु राजस्थान की निवासी होने के कारण शोधकर्त्री द्वारा राजस्थान की स्थानीय भाषाओं तक शोध कार्य को सीमित रखा जायेगा।

9.2 अध्याय द्वितीय –सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन–

प्रस्तुत अध्ययनों में भाषा व लौकिक संस्कृति का अध्ययन किया गया है उक्त शोध के निष्कर्षों के आधार पर भाषायी गतिविधियों में भाग लेने वाले छात्रों के सामाजिक व पर्यावरणीय मूल्यों तथा दृष्टिकोणों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भाषा को एक उपकरण के रूप में प्रयोग करने पर छात्रों की रूचि पर प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर ये स्पष्ट होता है कि स्थानीय भाषाओं का सामाजिक व पर्यावरणीय मूल्यों के साथ साथ संस्कृति के विकास में योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता। इस क्षेत्र में जितने भी शोध हुए हैं उनमें स्थानीय भाषाओं का संस्कृति के विकास में योगदान या सांस्कृतिक विकास में स्थानीय भाषाओं की भूमिका से सम्बन्धित शोध देखने में नही आया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा शोध समस्या से सम्बन्धित चरों पर भारतीय तथा विदेशी

अनुसंधानों का अवलोकन किया जाएगा ताकि शोध को उपयुक्त दिशा दी जा सके।

9.3 अध्याय तृतीय – स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के सांस्कृतिक विकास में योगदान (लोक कला, लोक संस्कृति, रीति-रिवाज, परम्परा मेले, उत्सव, व्रत त्यौहांर)

9.4 अध्याय चतुर्थ – स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के साहित्यिक विकास में योगदान

9.5 अध्याय पंचम – स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों के आध्यात्मिक विकास में योगदान

9.6 अध्याय षष्ठम – स्थानीय भाषाओं का सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण में योगदान

9.7 अध्याय सप्तम – स्थानीय भाषाओं का विद्यार्थियों की वर्तमान संस्कृति पर प्रभाव।

9.8 अध्याय अष्ठम – स्थानीय भाषाओं की चुनौतियाँ विद्यार्थियों के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

9.9 अध्याय नवम – निष्कर्ष एवं सुझाव

शोध कार्य में लगने वाला समय

प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा जिसका विवरण निम्न प्रकार से किया जा रहा है।

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोध कार्य	अनुमानित समय
	प्रथम अध्याय	3 माह
	द्वितीय अध्याय	3 माह
	तृतीय अध्याय	2 माह
	चतुर्थ अध्याय	2 माह

	पंचम अध्याय	2 माह
	छः अध्याय	2 माह
	सप्तम अध्याय	2 माह
	अष्टम अध्याय	2 माह
	नवम अध्याय	2 माह
	प्रतिवेदन लेखन कार्य	2 माह
	टंकण कार्य व जिल्दसाजीकार्य	2 माह
	कुल	24 माह

Outline of the synopsis approved **Signature of the candidate**

Smt. Alpana Sharma

Signature of supervisor with Date

Name – Pro. Kanchan Sharma

–: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

हिन्दी पुस्तकें

1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र. (2009). आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ और समाधान. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. तिवारी, भोलानाथ. भाषा विज्ञान कोश. वाराणासीः ज्ञानमण्डल लिमिटेड, पृ. सं. 456 व 457
3. महर्षि, ओमप्रकाश. (2010). वाल्मीकि रामायण में वर्णित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन. पृ.सं. 103
4. विद्या भारती प्रदीपिका (जुलाई–सितम्बर 2015), नई दिल्लीः प्रज्ञा सदन, गो. ला. त्रे. सरस्वती बाल मन्दिर, पृ.सं. 7

List of Journals and Educational Survey

1. Buch, MB. Fourth survey of research in education. (1983-88) vol-11 P.tv – 1425
2. Buch, M.B. fourth survey of of research in education. (1983-88) vol-II
3. Educational Research and Review, Vol-2 (7), P.P.-165-171, July 2007
4. Educational Research and Review, Vol-6 (6), P.P-489-496, June 2011
5. International Journal of Academic Research Vol-3, No.-1, January-2011, Part-III
6. Indian Journal of Educational Research, Experimentation and Innovation, ISSN 2231-0495.
7. Journal of Educational & Psychological Research, Vol-1, No. 2, July – 2011.
8. Journal of Research in Education & Society. Vol-2, No.1, April – 2011

Certificate of Supervisor

Certified that :-

1. *I am Verifying to guide the research work of Shri …………………… ….. on the above subject if he/she registered for Ph.D.*
2. *To the best of my knowledge the subject selected has not been studied and in not being studied so for in my University.*
3. *The Subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.*
4. *The Subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline and bibliography, etc. submitted by the candidate.*
5. *Necessary facilities are available in the Department for the above research work (Certificate form Principal/Head Univi. Dept. with regards to facilities available is enclosed.)*
6. *I have ……………………… research synopsis of this candidate registered under my Supervision and the serial number of this candidate whose application being forwarded for registration is …………………….*
7. *The candidate is not a close relation (The term close relation in defined is the examination ordinance of the university)*

Signature of The
Supervisor with Date

Certified that the available facilities will be extended to shri ……………………… for research work if he registered for Ph.D.

Signature of the Principal	*Signature of The*
Director of the Institution with Date	*Head of Department with Date*